अष्टम् अध्याय

8. देवेश ठाकुर के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय सांस्कृतिक यथार्थ के विविध आयाम

'संस्कृति' शब्द रहन-सहन और आपारगत परम्परा आदि अर्थों में लिया गया है । संस्कृति का संबंध मानव की मानस भूमि से होता है। प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति होती है । संस्कृति किसी देश या समाज के विभिन्न जीवन व्यापारों, सामाजिक संबंधों एवं मानवीय दृष्टि से प्रेरणादायक तत्त्वों की सृष्टि को कहते हैं । संस्कृति साहित्य के समान समाज की धरती पर उगने वाला फूल है, जो स्वयं सुगंधित है और दूसरों को भी सुगंधित करता है । संस्कृति रूपी भित्ति के आधार पर ही उच्च साहित्य का सर्जन संभव है । संस्कृति मानव के जीवन एवं व्यक्तित्व को संपुष्ट करती है । सहिष्णुता एवं समन्वय की भावना भारतीय संस्कृति का महत्त्वपूर्ण पक्ष है। हिन्दी साहित्य कोश में संस्कृति को सामाजिक प्रथा का पर्याय कहा गया है।"[1]

आधुनिक शिक्षा के प्रसार से जो जागृति आ रही थी जिससे इस युग में उसका चरमोत्कर्ष हुआ जिसके परिणामस्वरूप मध्यमवर्गीय समाज का दृष्टिकोण आधुनिक हो गया और उनमें बौद्धिकता का प्राधान्य हुआ जिसके कारण धार्मिक और सामाजिक रूढ़ियों की दीवार गिरने लगी । भारतीय मध्यमवर्गीय समाज में भारतीय और पाश्चात्य संस्कृतियों का समर्थन करने वाले व्यक्ति हैं । मध्यमवर्ग के लोग रहन-सहन, वेश-भूषा, खान-पान के दृष्टिकोण में विदेशी शासकों की नकल कर स्वयं को अन्य जनता से श्रेष्ठ समझते हैं तथा दूसरी ओर मध्यमवर्गीय समाज में ऐसे लोग भी हैं जो भारतीय संस्कृति की महत्ता और श्रेष्ठता को न केवल पहचानते हैं बल्कि स्वयं उसी ढंग से जीवन-यापन करके उसका प्रचार भी करते हैं। मध्यमवर्ग बसन्त, होली, तीज आदि अनेक त्यौहारों को मनाता है । मध्यमवर्गीय समाज में नवजात-शिशु का किसी

---

1. धीरेन्द्र वर्मा (सं०), हिन्दी साहित्य कोश, प्रयाग, प्रथम संस्करण, 1965, पृ० 568

विशिष्ट दिन नामकरण संस्कार किया जाता है । इस वर्ग के लोग विवाह संबंधी तथा मृत्यु संबंधी रीतियाँ भी बनाते हैं । मध्यमवर्ग के लोग वेशभूषा का विशेष ध्यान रखते हैं कि कब, कहाँ और कौन-से वस्त्र पहनने हैं। ये लोग खान-पान का भी विशेष ध्यान रखते हैं कि किस समय, कैसा भोजन करना चाहिए और मेहमान आदि आने पर कैसा भोजन परोसना चाहिए ताकि उनका मान-सम्मान बढ़े और समाज में एक उत्तम दर्जा मिल सके और यह सब हमें देवेश ठाकुर के उपन्यासों में देखने को मिलता है ।

8.1 वार्तालाप एवं संभाषण शैली का चित्रण

मध्यमवर्गीय समाज पर विदेशी भाषा का बहुत प्रभाव है। अंग्रेजी भाषा बोलना और बोल सकना योग्यता का प्रतीक समझा जाने लगा । इसी भाषा में बोलने को अधिमान दिया जाने लगा । उच्च मध्यमवर्गीय घरों में अंग्रेजी बोलने पर बल दिया जाता है ताकि समाज में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ सके । मध्यमवर्ग में अंग्रेजी भाषा का मोह इतना अधिक दिखाई देता है कि मित्र परस्पर भारतीय भाषा में बातचीत करते हुए भी, विशेष बात को अंग्रेजी भाषा में कहते है । 'अपना-अपना आकाश' उपन्यास में दिखाया गया है "आठ बजे हैं प्रिया ! वे अपनी स्टडी में बैठे हैं । अभी चाय देकर आई हूँ ।

- बोगनविला बहुत फैल गया है । इसे ट्रिम करवा देंगे ।
- गर्मियों के बाद करवायेंगे- गर्मियों की हरियाली अच्छी लगती है।
- आज कॉलेज है?
- है तो क्यों?
- कुछ नहीं । बस यों ही । आज मुझे दस बजे तक एयरपोर्ट पहुँचना है । प्रधानमंत्री आ रही हैं । मैं गाड़ी ले जाऊँगी। तुम बस से चली जाना ।
- ओ॰ के॰ ममी..... तुम कहोगी, हम पैदल भी चले जायेंगे।
- बी॰ ए॰ में तुम्हारी अच्छी डिवीजन आ जाये तो अगले साल तुम्हारे लिए भी एक फिएट खरीद देंगे ।

– ओह ममी.... हाउ नाइस ऑफ यू.... चाय और लोगी..?"[1]

मध्यमवर्ग के लोग भारतीय भाषा बोलते हुए उसमें एकाध अंग्रेजी शब्द के प्रयोग भी करते हैं । "हलो.... अविनाश हैं ।

– हाँ, जरा बुलाओ ।

– कहना, पी॰ का फोन है.... ।"[2] इस वर्ग के लोग सामान्यत: अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग तो करते ही हैं, उसके साथ- साथ उनके बोलने में भिन्न-भिन्न प्रकार के शब्दों का प्रयोग भी करते हैं जिनमें निरन्तरता होती है। एक के बाद दूसरा निरन्तर बोलता है और उनकी वार्तालाप चलती रहती है । 'भ्रमभंग' उपन्यास में दिखाया गया है कि जब चन्दन को पैसों की आवश्यकता होती है तो वह अपने एक दोस्त के पास जाता है । उनकी वार्तालाप इस प्रकार है –

'"कितने पैसे चाहिएँ?'

'करीब तेईस रूपये कम हैं।'

'कब जाना है?'

'कल की गाड़ी पकड़नी है ।'

'मैं कोशिश करता हूँ । तुम भी करो ।'

'मैं उसका मुँह देखता हूँ ।'

'चलो, चाय पी लें ।'

'बिल्कुल मूड में नहीं हूँ । पैसों की चिंता है ।

'हो जायेंगे, चल चाय पी लें ।'"[3]

इस वर्ग के लोगों की बातों में व्यंग्य भी देखने को मिलता है। बातों-बातों ये सभी प्रकार की बातें कह देते हैं । ये लोग अपने जीवन के

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र॰सं॰), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (अपना-अपना आकाश), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ॰ 121
2. वही, पृ॰ 126
3. रोहिणी शिवबालन (प्र॰सं॰), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (भ्रमभंग), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ॰ 382

बारे में भी निरन्तर बातें करते रहते हैं और भविष्य के प्रति भी चिंता व्यक्त करते हैं । 'भ्रमभंग' उपन्यास का चंदन जब अपने चाचा जी के पास जाता है तो वे दोनों बातें करते हैं। उसके चाचा जी कहते हैं ।

'"भाई साहब ठीक हैं?' वे पिताजी के बारे में पूछते हैं।

'ठीक ही होंगे । मैं देहरादून से आ रहा हूँ ।'

'क्यों नजीबाबाद नहीं गया?'

'जा नहीं सका । कॉलेज में दाखिला लेना था ।'

'हाँ... अब क्यों जायेगा, एम०ए० कर लिया है न ।'

'नहीं चाचा जी, ऐसी कोई बात नहीं ।'"[1]

इसी प्रकार से इस वर्ग के लोगों में बात करने के लहजे भी होते हैं। 'प्रिय शबनम' उपन्यास में मंगल द्वारा शबनम नामक युवती से प्रेम की बात अपनी माँ से कही और शादी करने को भी कहा । इस पर उसकी माँ ने अपने लहजे में उसको समझाने की कोशिश भी की है । उसकी माँ निरन्तर उससे सवालों के माध्यम से बात करती है । मंगल उसकी कई बातों का जवाब देता है और कुछ बातों का उसके पास कोई जवाब नहीं होता । उसकी माँ कहती है-

'"तेरे पास दो पहियों की साइकिल ही है?'

मैं चुप रहा था ।

'उसका बाप क्या करता है रे?'

बहुत बड़े एडवोकेट हैं ।'

'और जानता है, तेरा बाप क्या है?'"[2] मंगल की माँ उसे अपनी वास्तविकता से अवगत करवानी चाहती है ।

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-1 (भ्रमभंग), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 29
2. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-1 (प्रिय शबनम), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 240

मध्यमवर्ग के लोग अपनी वार्तालाप में अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग तो करते ही हैं । साथ में निरन्तर बात बनाने की क्षमता भी उनमें होती है और एक-दूसरे के विचारों में घुल-मिल जाते हैं । "काँचघर' उपन्यास में वह स्थिति दिखलाई पड़ती है जिसमें प्रेमी-प्रेमिका आपस में वार्तालाप कर रहे हैं । "आज सुबह से बादल हैं ।

- मुझे बादल बहुत सुन्दर लगते हैं । धरती पर छाया करते बादल ।
- इस रेस्तराँ की 'सिचुएशन' भी बड़ी अच्छी है ।
- हमारे तुम्हारे लिए न ।
- नहीं हम-तुम जैसों के लिए ।"[1]

मध्यमवर्गीय परिवारों में अपने को श्रेष्ठ दिखाने और अपने को सुशिक्षित होने का प्रमाण देने की आकांक्षा हर समय रहती है और वे हमेशा हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग भी करते हैं ताकि उनका अलग से प्रभाव दिख सके । इस वर्ग के लोगों में बात की एक विशिष्ट शैली होती है और उनका दूसरे वर्गों से भिन्न प्रकार का लहजा होता है । ये लोग अपने सवालों में ही उसका उत्तर स्वयं दे देते हैं और इनकी वार्तालाप में निरन्तरता भी होती है ।

8.2 त्यौहार-उत्सवों का चित्रण

मध्यमवर्ग के लोग वसन्त, होली, तीज, दीपावली आदि अनेक त्यौहारों को मनाते हैं । देवेश ठाकुर के उपन्यास 'इसीलिये' में अवस्थी को रोशनी देखकर अपने पहले के दिन याद आते हैं, जब उनके घर में दीपावली का त्यौहार मनाया जा रहा था और उसके पिताजी जुआ खेलते थे और शराब पीते थे । उसकी माता रसोई में खाना तैयार कर रही थी और वह बाहर बच्चों के साथ आतिशबाजियाँ छोड़ रहा था । उसे सब बातें याद आ रही हैं और उस समय त्यौहार पर खुशी का माहौल होता है लेकिन घर में सुख-चैन न हो तो सब फीका पड़ जाता है । "सामने की रोशनी को देखकर कितने साल पहले

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-1 (काँचघर), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 302

की दीपावली याद आ रही है । तब दसवीं में पढ़ता था । पिताजी दोस्तों के साथ बैठे देर तक जुआ खेलते रहे थे और शराब पीते रहे थे । माँ रसोई तैयार करके वहीं किचन में बैठी थी । मैं दोस्तों के साथ बाहर कालोनी में आतिशबाजियाँ छोड़ रहा था । कभी-कभी घर में आकर झाँक जाता था ।"[1]

मध्यमवर्ग के लोग अपने कष्टों और दु:खों के निवारण के लिए ही त्यौहारों को मनाते हैं तथा वे इस दिन हर संभव कार्य करने का प्रयत्न करते हैं । अन्नत चतुर्दशी त्यौहार पर वे गणेश पूजा करते हैं तथा उसकी मूर्ति को भी विसर्जित करते हैं । उनका गणेश जी पर पूर्ण विश्वास है कि वह उनके सारे कष्टों को दूर कर देंगे । "आज अन्नत चतुर्दशी है । गणपति विसर्जित करेंगे। गणेश उनका विश्वास है, अगले साल के लिए उन्हें सब मुसीबतों से मुक्त कर देगा । इसीलिए इतना उत्साह है । इतनी श्रद्धा इतनी आस्था ।"[2]

दूसरे वर्गों के समान ही मध्यमवर्ग के लोग भी विभिन्न प्रकार के त्यौहार उत्सव मनाते हैं । उन्हें अपने ईश्वर पर पूर्ण विश्वास होता है । वे मानते हैं कि उनका ईश्वर ही उनके सारे दु:खों का निवारण कर सकता है । दीपावली जैसे त्यौहारों पर कई मध्यमवर्गीय लोग जुआ खेलते हैं और शराब पीते हैं जिससे उनका पारिवारिक वातावरण सुख और खुशी की बजाय दु:खी और पीड़ित बन जाता है। अन्नत चतुर्दशी पर ये लोग गणेश विसर्जित करते हैं । उनकी अपने ईश्वर के प्रति अपार श्रद्धा और आस्था होती है । इस अवसर पर उनके मन में उत्साह होता है ।

8.3 नामकरण-संस्करण का चित्रण

मध्यमवर्गीय समाज में नवजात शिशु का किसी विशिष्ट दिन नामकरण संस्कार किया जाता है तथा इस दिन परिवार के सभी सदस्य एकत्रित होते हैं। देवेश ठाकुर के उपन्यास 'इसीलिये' में यह दिखाया है "आया बड़ी मेहनती है। कल हमारी बच्ची एक महीने की हो जाएगी ।

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (इसीलिये), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 25
2. वही (जनगाथा), पृ० 355

चन्द्रा पूछ रही थी क्या नाम रखेंगे हम अपनी बच्ची का । मैंने अभी तक इस बारे में सोचा ही नहीं था । रघुवंशी ने एक नाम सुझाया है - 'आशा'

लेकिन आशा पुराना नाम है । कोई नया नाम होना चाहिए । नया न भी हो अच्छा-सा तो होना ही चाहिए । कोई सार्थक नाम, प्रज्ञा नाम कैसा रहेगा? मेरी बच्ची जरूर ही विदुषी होगी । मैं उसे विदुषी बनाऊँगा ।"[1] इस वर्ग के लोग अपने बच्चों का नामकरण संस्करण करते हैं और किसी खास समय पर । नाम के पीछे भी उनकी बहुत-सी इच्छाएँ होती हैं । नाम के अनुसार ही ये लोग अपने बच्चों के व्यवहार को बनाना चाहते हैं और उनमें असीम प्रतिभा देखना चाहते है । 'भ्रमभंग' उपन्यास में चन्दन और उसकी पत्नी पहले से अपने बच्चे का नाम सोचते हैं और हिन्दी वर्णमाला के पहले अक्षर 'अ' से रखना चाहते हैं । "पहले बच्चे का 'अ' से होना चाहिए । पहला नाम । पहला अक्षर 'अ' से नाम बताओ । अनीता । अल्का । आनंद। नहीं, आशीष । हाँ आशीष ठीक है । बेटा होगा तो आशीष । लेकिन बेटी हुई तो...?.... अल्का नहीं जमती । हम मध्यमवर्गीय लोग । अलका से अभिजात्य की गन्ध आती है। अल्का नहीं, अनीता भी नहीं । फिर? आभा... । यही ठीक रहेगा।"[2]

मध्यमवर्गीय लोग अपने बच्चे का नाम पूरी तरह सोच-समझकर तथा विशिष्ट मौके पर रखते हैं ताकि समाज और देश में उनके बच्चे का नाम प्रसिद्धि प्राप्त करे और नाम के अनुरूप ही वह कार्य करे । वे चाहते हैं कि नाम में नयापन भी हो, जो आकर्षित करने वाला हो ।

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (इसीलिये), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ०
2. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (भ्रमभंग), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 141

8.4 विवाह संबंधी रीतियों का चित्रण

कुछ रीतियाँ विवाह से पूर्व, कुछ विवाह के समय और कुछ विवाह के बाद पूरी की जाती हैं । विवाह से पूर्व वर-बहू को देखने-दिखाने की रीति को मान्यता मिल गई है । कहीं फोटो के आदान-प्रदान से काम चला लिया जाता है । आज के युग में मध्यमवर्गीय परिवारों के अधिकतर लोग कोर्ट मैरिज कर लेते हैं। वे घर वालों का इसमें हस्तक्षेप नहीं चाहते । देवेश ठाकुर के 'इसीलिये' उपन्यास में दिखाया गया है कि कोर्ट-मैरिज के बाद भी मध्यमवर्ग के लोग दावत आदि करते हैं और होटलों में भोजन कराते हैं । "और इसके कुछ ही दिन बाद एक दिन हम दो चार साथियों की उपस्थिति में उसने कोर्ट-मैरिज कर ली । एक बढ़िया होटल में हम सबको दावत दी गई । हमने उसे अपनी शुभकमानाएँ दी। उससे हल्के-फुल्के मजाक किए और उससे विदा लेकर अपने-अपने घर चले आए ।"[1] शादी के बाद, चाहे वह किसी भी तरीके से की गई हो, उसमें थोड़ा हर्षोल्लास का माहौल पैदा किया जाता है । बड़ी शादियों में तो शहनाईयाँ, रोशनी, फुलझाड़ियाँ आदि कार्य किये जाते हैं तथा दूल्हन के हाथों को मेंहदी से रचाया जाता है और उसके लिए सितारों, कढ़ाई वाले आदि रंग-बिरंगे कपड़े लाये जाते हैं । 'जनगाथा' उपन्यास में दिखाया है- "शमीम नई जिंदगी शुरू कर रही है । शकुन सोच-सोचकर रोमाँचित हो उठती है । उसके जहन में शहनाईयाँ बजने लगती हैं । रोशनी । फुलझड़ियाँ, सोहर, मेहंदी रंगे हाथ । रेशमी कपड़े । सलमें-सितारों वाला आँचल। लाज का घूँघट । माथे पर चाँदी का चाँद । चूड़ियों से भरे हाथ । चन्दन धुला शरीर । एक पवित्र ग्रन्थ । एक नई जिंदगी। जिंदगी में रोज नया बनने-सँवरने की बला की हिम्मत होती है। शकुन की आँखें मुंद जाती है । एक गुलाबी सपना-सुख के फूलों से लदा-फदा सपना उसके आस-पास घुलने लगता है।"[2] मध्यमवर्गीय लोग शादी मे हर प्रकार की रीति को निभाते हैं

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (इसीलिये), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 67
2. वही (जनगाथा), पृ० 285

तथा विभिन्न प्रकार की रस्में और रिवाज निभाते हैं । फेरों के समय विभिन्न प्रकार की रीतियाँ निभाई जाती हैं । 'जनगाथा' उपन्यास में दिखाया है - "बेदी की आसपास फूल बिछे हैं । कितना आह्लादक है, इन फूलों की बिछावन पर सप्तपदी लेना । दो जोड़ी ताजे गुलाबी पाँव । यज्ञकुण्ड । मन्त्रोचार । झुका हुआ चेहरा-शकुन । सीधा, तना हुआ गात-मोहिन्दर । चेहरे पर शान्ति है । मन बाँसो उछल रहा है । पवित्रता का शान्त स्पर्श ।"[1] मध्यमवर्ग के लोग विवाह में विभिन्न प्रकार की रीतियाँ अपनाते हैं । विवाह में खुशी का माहौल होता है । फूलों को इस अवसर शुभ माना जाता है।

इस वर्ग में विवाह से पूर्व यह बातें भी तय की जाती हैं कि विवाह में क्या लेना है और क्या देना है । लड़के वाले पहले से ही माँग कर लेते हैं । 'काँचघर' उपन्यास में दिखाया गया है । "आप तो जानते ही हैं । लड़के का नया घर होता है । घर में फ्रिज भी चाहिए । टी-सैट और डिनर सैट के बारे में तो कहने की बात ही नहीं है । आजकल टेलीविजन के बिना घर सूना-सूना लगता है । फिर चाँदी का एक थाल और एक चाँदी की कटोरी-केसर के लिए । मिठाई के 11 डिब्बे काफी होंगे और मिलनी में एक हजार एक रुपये । बस..... इतना काफी है । हम किसी पै ज्यादा दबाव नहीं डालना चाहते जी.... इससे आगे भी जो आप अपनी लड़की को देना चाहें..... ।"[2]

मध्यमवर्ग के लोग विवाह से पूर्व, विवाह में और विवाह पश्चात् विभिन्न प्रकार की रीतियाँ निभाते हैं और उनका पालन करते हैं । ये लोग विवाह में अच्छा माहौल दिखाने का हर संभव प्रयत्न भी करते हैं ताकि समाज में उनकी प्रतिष्ठा बढ़े और लोगों के साथ उनके अच्छे संबंध बन सकें ।

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (जनगाथा), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 308
2. वही, (काँचघर), पृ० 377

8.5 मृत्यु संबंधी रीतियों का चित्रण

मध्यमवर्गीय समाज में जिस प्रकार से विवाह सम्बन्धी रीतियाँ होती हैं, उसी प्रकार मृत्यु होने पर विभिन्न प्रकार की रीतियाँ होती हैं । जब किसी की मृत्यु हो जाती है तो उसे अर्थी पर सजाया जाता है और उस पर फूल आदि भी बिखेरे जाते हैं तथा 'राम नाम सत्य है' का जाप किया जाता है । देवेश ठाकुर के उपन्यास 'जनगाथा' में दिखाया है "अर्थी ! सस्ते फूलों की मालाएँ। ढका हुआ चेहरा । 'राम नाम सत्य है ।' एक जिन्दगी और राख हो गयी।"[1] मृत्यु के पश्चात् बहुत-से लोग आते हैं, उनमें से कुछ अजनबी भी आते हैं, जिन्हें पहले कभी नहीं देखा होता है । मध्यमवर्गीय लोग एक-दूसरे के दु:ख में शरीक होना अपना सौभाग्य समझते हैं और रीतियों के अनुसार ही आते हैं। "कितने सारे लोग आए हमारे दु:ख में शरीक होने । कितने रिश्तेदार, कितने मिलने वाले। कितने दोस्त । अब पता लगा-हमारे कितने संबंधी हैं । कुछ लोग तो पहली ही बार आए थे ।"[2] ऐसे मौकों पर बहुत-से लोग इकट्ठे हो जाते हैं । जब 'जनगाथा' उपन्यास की शकुन का शवदाह कर दिया जाता है तो इसके पश्चात् उसकी अस्थियों को इकट्ठा किया गया और अस्थि-कलश में डालकर मेरठ ले गए । इस वर्ग के लोग अस्थियों को इकट्ठा करके उसे पवित्र जल में विसर्जित भी करते हैं तथा उसकी आत्मा की शांति के लिए हवन भी करवाए जाते हैं । "घर के बाहर पाण्डाल लगाया गया था । सभी रिश्तेदार आए थे । शहर क जान-पहचान वाले भी । कोई तीन-चार सौ लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई थी । शकुन की आत्मा की शान्ति के लिए हवन किया गया था । यज्ञकुण्ड के सामने आर्य समाज सज्जन बैठे थे- मंत्रोच्चारण से पूरा वातावरण गम्भीर था....

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (जनगाथा), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 305
2. वही, पृ० 356

ओम भूर्भुवः स्वः ओःम् तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धी महि..."[1]

मध्यमवर्ग के लोग मृत्यु संबंधी अनेक प्रकार की रीतियाँ अपनाते हैं तथा मृतक की आत्मा की शांति के यज्ञ करवाते हैं जिनमें मंत्रों का उच्चारण भी किया जाता है । चिता को अग्नि देने से पूर्व से उससे अन्तिम स्नान करवाया जाता है और लोग उस शव पर सफेद कपड़ा डालते हैं । इस समय सभी रिश्तेदार-संबंधी इकट्ठे हो जाते हैं और शव को शमशान तक ले जाया जाता है । आगे-आगे पुरुष होते हैं और उनके पीछे-पीछे औरतें चलती हैं । 'भ्रमभंग' उपन्यास में यह दिखाया गया है - "नीचे अरथी तैयार हो चुकी है। दी को अन्तिम स्नान कराया जा चुका है । हम उसे बाहर ले आये हैं । सामने ही नीचे अरथी रखी है । दी को धीरे से उस पर लिटा लिया गया है। अब शव-यात्रा शुरू होगी । बीस-बाईस मित्र-परिचित इकट्ठे हो गये हैं । सब काम ठीक से निपट जायेगा ।

.... हमने कंधों पर अरथी उठा ली है । शुभी बॉल्कनी पर खड़ी है । सूजी-सूजी आँखें.... सूनी उदास दृष्टि.... साड़ी का पल्लू मुट्ठी में भींचे है.... । बच्चे सहमे हुए हैं ।

हम लोग आगे बढ़ने लगे हैं.... ।

श्मशान । दो बज रहे हैं । दी का शव लगभग जल चुका है। हम लोग जैसे सभी अपने-अपने में खोये हुए लौट रहे हैं । घर कितना खाली हो गया है.... ।"[2]

देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यासों में मध्यमवर्ग के यथार्थ को बताते हुए उनकी मृत्यु संबंधी विभिन्न प्रकार की रीतियों को दिखाया है । इस वर्ग के लोग मृत्यु होने पर अर्थी को सजाते सँवारते हैं और उस पर फूल मालाएँ भी डालते हैं तथा शवदाह के बाद अस्थियों को कलश में डालकर गंगा के

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (जनगाथा), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 503
2. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-1 (भ्रमभंग), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 186

पवित्र जल में विसर्जित करते हैं । इसके साथ-साथ ये लोग मृतक की आत्मा की शांति के लिए यज्ञ या हवन आदि भी करवाते हैं और मन्त्रों का जाप भी किया जाता है ताकि उसकी आत्मा को कोई कष्ट या दु:ख न हो ।

8.6 आचार एवं व्यवहार का चित्रण

मध्यमवर्ग अपनी खोखली स्थिति छिपाये रखने के लिए तथा अपनी बाहरी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए झूठ का सहारा ले लेता है, धोखा देने में संकोच नहीं करता और घूस लेने की योग्यता को बढ़ाता है । अधिक-से-अधिक धन प्राप्ति की इच्छा की पूर्ति के लिए वह सब कुछ करता है । इसके साथ-साथ उनमें हमेशा निरन्तर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति होती है और वे अपने परिवार के सदस्यों को भी आगे बढ़ाना चाहते हैं । देवेश ठाकुर के उपन्यास 'इसीलिये' में दिखाया है कि मध्यमवर्गीय व्यक्ति थोड़ी-सी सफलता से खुश नहीं होता बल्कि और ज्यादा कुछ करने की बात करता है ताकि समाज में उसकी प्रतिष्ठा बढ़े । "कल मेरा परीक्षाफल निकला था । दिन भर दोस्तों के बीच में रहा.... शाम तक काफी थक गया था । रात को जल्दी नींद आ गई । नींद आते ही तुम आ गए । तुमने मुझे बधाई नहीं दी । तुम्हें मालूम है, तुमने पहला वाक्य क्या बोला था, 'यह अगर थोड़ी मेहनत और कर लेता तो फर्स्ट आ सकता था ।"[1] उनमें निरन्तर आगे बढ़ने की लालसा है और अपने परिवार के सदस्यों को आगे बढ़ते देखकर ही उसे सुकुन मिलता है।

'इसीलिये' उपन्यास का अवस्थी अपनी माँ को दुनिया का हर सुख देना चाहता है जिसने उसे पाला-पोसा है और उसकी अच्छी परवरिश की है । उसकी माँ ने अपनी सारी जिन्दगी अपने बेटे के लिए कठिनाईयों और परेशानियों में बिताई थी । वह कहता है, "चाहता हूँ, माँ की खूब-खूब लम्बी जिन्दगी हो और मैं उसे कुछ सुख दूँ । जिस बेटे के लिए उसने अपनी जिन्दगी होम दी वह बेटा उसके लिए कुछ तो ऐसा करे कि जिससे उम्र के इस पड़ाव में उसे भी थोड़ी खुशी हासिल हो सके और वह अपने को एक

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (इसीलिये), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 18

खाली तसल्ली तो दे ही सके कि उसके बेटे ने उसके प्रति अपना कर्त्तव्य निभाया है ।"[1] मध्यमवर्गीय युवती अपने आप को इस समाज से बचाने के लिए तथा अपनी इमेज बनाने के लिए कोई-न-कोई कार्य करना चाहती है । यदि वह कोई कार्य न करे तो उसका काम नहीं चल सकता । वह निरन्तर सफलता प्राप्त करना चाहती है । 'इसीलिये' उपन्यास में दिखाया गया है "पत्रकारिता का कोर्स और अब इसके साथ-साथ कुछ दिनों से अखबार के दफ्तर में काम करना मेरे लिए बहुत फायदेमंद रहा है । इस बहाने मैं किसी के भी साथ रहूँ, किसी को कोई शंका नहीं होती । वैसे यह एक पर्दा और मुखौटा है जिसको ओढ़कर मैं अपनी दिशा में बढ़ती जा रही हूँ... और..... अब तक सफल होती रही हूँ ।"[2] मध्यमवर्ग के लोगों में एक बात और होती है कि जब भी कोई उनके घर आता है तो वे उनका हार्दिक अभिनंदन करते हैं और बहुत ही नम्र स्वभाव से बोलते हैं तथा उनके चेहरों पर मुस्कराहट होती है । "....अरे तुमने यहाँ आकर यह तकलीफ क्यों की । सब ठीक है। देखो, आज उर्वशी ठीक लग रही है न ।

मैंने मिसेज मेहता की ओर देखकर हाथ जोड़ दिए । उन्होंने किसी तरह मेरे नमस्कार का उत्तर दिया और ऐसा करते हुए उनके होठों के कोने थोड़े फैल गए ।

-देखा तुमने यह मुस्करा भी रही है । वे मजाक करने पर उतर आए थे । उनकी पत्नी इस बार सचमुच हँसने लगी ।"[3] वे लोग आपस में मजाक भी कर लेते हैं तथा हमेशा खुश रहने की कोशिश करते हैं । इनमें अच्छा इंसान बनने की इच्छा भी हमेशा रहती है और हमेशा कुछ-न-कुछ करने की सोचते हैं । 'अपना अपना आकाश' में दिखाया है "लेकिन हम क्या सचमुच मनुष्य बनते हैं, क्या सचमुच हम आदमी होने की दिशा में बढ़ते हैं? नहीं....

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (इसीलिये), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 18
2. वही, पृ० 49
3. वही, पृ० 83

समय हमें छोटा आदमी और बड़ा आदमी बनाता है । आदमी होना न छोटा आदमी होना है, न बड़ा आदमी होना । आदमी होना सिर्फ आदमी होना है । ऐसा आदमी, जिसमें आदमियत हो, मनुष्यता हो....। क्या आदमी में मनुष्यता होती है?"[1] वे यह मानते हैं कि मनुष्य को मनुष्य ही बने रहना चाहिए । उसे दानव या देवता नहीं बनना चाहिए । यदि वह ऐसा सोचता है तो इस सृष्टि में या मानव जीवन में कुछ भी अच्छा होना संभव नहीं है ।

मध्यमवर्गीय लोगों में अच्छाई पाने की इच्छा हमेशा रहती है। इसलिए वे अपने सुख में सबको शामिल करते हैं, चाहे दु:ख में कोई शामिल हो या न हो । 'जनगाथा' में जोशी जी के व्यवहार के बारे में उसका दोस्त बता रहा तथा इसके साथ-साथ अपना व्यवहार भी प्रकट कर रहा है । "यह स्साला जोशी भी अजीब आदमी हैं । पन्द्रह दिनों से अस्पताल में पड़ा है और मुझे इन्फार्म तक नहीं किया । वैसे मैं इसकी यह आदत जानता हूँ । अपने दु:ख में किसी की सांझेदारी बर्दाश्त नहीं करेगा और सुख को कभी अकेले नहीं भोगेगा । जिद्दी इतना कि अपनी शर्त पर जीएगा । चाहे उसके लिए कितनी भी तकलीफ क्यों न उठानी पड़े ।"[2] जोशी जी के व्यवहार में जिद्दीपन भी बताया गया है कि वह अपने वायदे पर अडिग हैं और उसके लिए कुछ भी करने को हमेशा तैयार रहते हैं ।

इस वर्ग के लोगों का व्यवहार ऐसा भी है कि ये लोग कोई भी चीज माँगते समय शर्म महसूस करते है । 'भ्रमभंग' उपन्यास के निम्न मध्यमवर्गीय चन्दन को बम्बई जाने के लिए पैसों की आवश्यकता होती है तो वह इधर-उधर से पैसे माँगने की सोचता है। जब वह अपने किसी रिश्तेदार के पास जाता है तो वहाँ देखता है कि उसकी पत्नी बीमार है । इस स्थिति में वह पैसे नहीं माँगता बल्कि जो पैसे उसे दवाई के लिए मिलते हैं, उनकी वह दवाई ही लाता है । एक बार तो वह असमंजस में होता है कि वो पैसे

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (अपना अपना आकाश), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 244
2. वही (जनगाथा), पृ० 470

लेकर भाग जाये लेकिन उसकी अन्तरात्मा उसे ऐसा करने से रोकती है । "कोई काम था चन्दन?' 'जी नहीं, बस मिलने आया था ।' तो एक काम करो । जरा डॉक्टर साहब के साथ चले जाओ। वाइफ की दवाइयाँ ले आना। मैं जरा पास बैठता हूँ ।'

दस-दस रुपये के दो नोट हाथ में थमा दिये गये हैं । असमंजस, खामोशी । मैं कुछ बोल नहीं पाता । डॉक्टर साहब ने कार स्टार्ट कर दी है। मैंने उनके पीछे साइकिल डाल दी है । मन में आता है-तेईस और बीस, तैंतालीस रुपये । चन्दन बेटे, अटैची उठाओ और स्टेशन चल दो । देखा जायेगा लेकिन नहीं.... । अगर यही कर सकने की सामर्थ्य होती.... ।"[1] चन्दन कोई भी गलत कार्य नहीं करना चाहता । जब चन्दन रेलवे स्टेशन जाता है तो उसके लिए किसी दूसरे द्वारा टिकिट ली जाती है । वह उस व्यक्ति के प्रति बड़ी कृतज्ञता व्यक्त करता है और उसके सम्मान में दोनों हाथ जोड़ लेता है । चन्दन कह रहा है, "वह टिकिट विण्डों पर जाता है। लौटता है... एक टिकिट मेरे हाथ में पकड़ा देता है । बम्बई सेण्ट्रल तक का टिकिट साथ में एक रुपया भी ।

'विश यू बेस्ट ऑफ लक !'

मैं कुछ कह नहीं पाता । कुछ सोच नहीं पाता । दो रोशनियाँ। गाड़ी आ रही है । अत्यन्त कृतज्ञता है आँखों में । मेरे हाथ जुड़ जाते हैं ।"[2] जब किसी दूसरे द्वारा उनकी सहायता की जाती है तो वे उसके प्रति कृतज्ञ हो जाते हैं तथा इस वर्ग के लोगों में इस प्रकार की भावना भी पैदा हो जाती है कि वो किसी का बुरा न चाहें और सदा सच्चे बने रहें । कई बार इन लोगों को झूठ भी बोलना पड़ता है लेकिन परिस्थितियों के अनुसार दिल खोलकर सब कुछ बता देना भी चाहते हैं । 'प्रिय शबनम' उपन्यास का मंगल

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-1 (भ्रमभंग), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 16
2. वही, पृ० 32

शबनम से प्यार करता है लेकिन बाद में उसकी जिंदगी में उसकी पुरानी दोस्त लाजो आ जाती है । वह उसे सहारा देता है और उसको अपने साथ रखता है । लेकिन लाजो उसे छोड़कर अपने पति जिसने उसे छोड़ दिया था, उसके पास चली जाती है । इस पर मंगल को बहुत दु:ख होता है और शबनम के सामने अपनी सभी प्रकार की बातें खुलकर बताना चाहता है तथा स्वयं को एक अपराधी की तरह मानता है । वह कह रहा है, "भावना और सुख के उन दिनों में मैंने तुम्हें अपने विषय में थोड़ा बहुत बतलाया था। हो सकता है, उसमें कुछ झूठ-सच भी रहा हो। आज चाहता हूँ, तुम्हें नये सिरे से अपने विषय में बतलाऊँ, ताकि मेरे प्रति तुम्हारे भ्रम की दिवार टूट जाये और तुम मुझे आर-पार देख सको कि जिसके लिए आज भी तुम्हारे मन में इतना सारा आदर भरा है, उसकी असलियत क्या है । आज तुम्हारे सम्मुख खुल जाने का बड़ा मन करता है । मन कहता है, यदि ऐसा हो गया, तो मुझे प्रायश्चित करने जैसी शान्ति मिलेगी.... यह भी अपने स्वार्थ के लिए कर रहा हूँ, शबनम !"[1]

मध्यमवर्ग के लोग आचार और व्यवहार अपने परिवार से ही सीखते हैं। जिस प्रकार का पारिवारिक माहौल होगा, वहाँ का वातावरण होगा उसी के अनुसार ही वे व्यवहार करते हैं । 'काँचघर' उपन्यास में उच्च मध्यमवर्गीय परिवार के बच्चे बिगड़े हुए होते हैं और अपने अनुसार ही कार्य करते हैं । वे घरवालों की किसी बात को नहीं मानते और आवारागर्दी करते हैं । यह इसलिए है कि उनके परिवार के लोग ही ऐसे हैं और उनका पारिवारिक माहौल उनको यही सब सिखाता है । उनके लिए नैतिक नियम बहुत तुच्छ वस्तु होती है । जब पिता द्वारा अपने बेटे को आवारगर्दी और बुरे कार्य करने पर धमकाया जाता है तो वह इसका यह जवाब देता है । "डैडी, डोन्ट माइण्ड । एक बात कहूँ । यह सब हमने आप से ही सीखा है । आप

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-1 (प्रिय शबनम), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 220

यूनिवर्सिटी में गुण्डागर्दी करते हैं और हम सड़कों पर । हाँ हमारे आपके तरीके अलग-अलग हैं । आपने हम भाई-बहनों को जो माहौल दिया है, हम सब उसी में बड़े हुए हैं।"[1] इस वर्ग की सोच किस प्रकार की है और कैसे कार्य करते हैं, यह सब उनके पारिवारिक माहौल पर निर्भर करता है । 'काँचघर' उपन्यास में दिखाया गया है कि एक उच्च मध्यमवर्गीय परिवार की बेटी आलोक नाम के युवक से प्रेम करती है और उससे शादी करना चाहती है लेकिन उसका पिताजी नहीं मानता और उसे डाँटता है। इस पर बेटी अपने पिताजी जको सभी बातों का करारा जवाब देती है। इससे उसके पिताजी की बातों में कुछ परिवर्तन होता है। अपने और पिताजी के बीच हुई सारी बातों को वह अपने प्रेमी आलोक को बताती है कि किस प्रकार से उसके पिताजी के व्यवहार में परिवर्तन होता है और क्या बात उसे उसके पिताजी ने समझानी चाही। वह कहती है, "जब पिताजी ने मेरा रूख देखा तो उन्होंने दूसरा पैतरा बदला । कहने लगे, अगर तुम्हें आलोक और आलोक के घर वाले इतने ही अच्छे लगते हैं, तो उससे दोस्ती रखो । दोस्ती तुम किसी से भी रख सकती हो, कितनों से भी रख सकती हो । लेकिन अभी से शादी का यह पागलपन क्यों कर रही हो और जो तुम यह सोचती हो कि तुम आलोक के साथ खुश रह सकती हो, यह तुम्हारी खामख्याली है । दूर के ढोल सुहावने होते हैं। बेवकूफी मत करो ।"[2] मध्यमवर्गीय बेटी अपने पिता के सामने अपने प्रेमी के बारे में बताती है और पिता अपनी बेटी को अपने तरीके से समझाता है लेकिन बेटी अपना कड़ा रूख अपने पिताजी के सामने अपनाती है । इस पर पिताजी के व्यवहार में थोड़ा परिवर्तन होता है और वह उसे आलोक के साथ केवल दोस्ती रखने की बात कहता है । पारिवारिक वातावरण के कारण ही

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-1 (काँचघर), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 321
2. वही, पृ० 362

बेटी अपने बाप के सामने ऊँचा बोलती है और बाप उन्हें सुनकर उसे समझाने की कोशिश करता है ।

मध्यमवर्ग के लोगों का आचार एवं व्यवहार उनकी प्रकृति के अनुसार ही सामने आता है । इस वर्ग के अधिकतर लोग अपने बड़े-बूढ़ों की सेवा करके अपना कर्ज उतारना चाहते हैं तथा पुण्य प्राप्त करना चाहते हैं ताकि उन्हें स्वर्ग में जगह मिल सके । इस वर्ग के लोग घर आने वाले मेहमान का अच्छा स्वागत करते हैं तथा मुस्कराहट के साथ उनके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं। मध्यमवर्गीय युवतियाँ अपना तथा अपने परिवार का जीवन अच्छा बनाने के लिए इस प्रकार के कार्य करती हैं जिससे समाज उन पर किसी भी प्रकार से ऊँगली न उठा सके । इस वर्ग के लोग अच्छा इंसान बनने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं और हमेशा अच्छाई को ग्रहण करना चाहते हैं । इन लोगों को केवल मानवता पसंद है। कई मध्यमवर्गीय लोग ऐसे भी होते हैं जो अपना दु:ख स्वयं भोगना चाहते हैं तथा अपना सुख दूसरों को देना चाहते हैं ।

8.7 खान-पान का चित्रण

मध्यमवर्ग के खान-पान में कोई विशिष्टता है तो केवल सफाई की, अन्यथा भारतीय समाज का सामान्य खान-पान ही मध्यमवर्ग का खानपान है । प्राय: दफ्तर आदि जाने से पूर्व कुछ जलपान आदि करते हैं । किसी खास मौके पर तो ये लोग खान-पान का विशेष ध्यान रखते हैं और समाज में अच्छी कही जाने वाली वस्तु ही परोसी जाती है । 'इसीलिये' उपन्यास में दिखाया गया है "मैं कपड़े बदलकर बैठा ही था कि वह चाय की ट्रे ले आई।

-आज मैंने तुम्हारे लिए पनीर की पकौड़ियाँ बनाई हैं, तुम्हें अच्छी लगती हैं न ।

– बिस्कुटों की जगह पनीर की पकौड़ियाँ । आज जरूर कोई खास बात है ।"[1] जब भी कोई खास बात होती है तो उस समय खास प्रकार की वस्तुएँ ही खाने को दी जाती हैं । मध्यमवर्ग के लोग हमेशा ही आरामदायक जगह पर ही कुछ खाना पसंद करते हैं। "शिला की छाया के नीचे बना यह छोटा-सा रेस्तराँ, सैलानियों का छिटपुट मेला-सा । लोग रेस्तराँ में बैठे हैं । लस्सी, चाय, मैंगलोला, थम्स-अप, टॉफी ।"[2] इस वर्ग के लोग रेस्तराँ में बैठकर अच्छा भोजन या फास्ट-फूड ही खाना पसन्द करते हैं तथा कॉफी को भी पसन्द करते हैं और इसके साथ-साथ ड्रिंक्स आदि करना भी उनके लिए आम बात है ।

–"एक कॉफी और हो जाए । उसने कहा था ।

– कॉफी या कुछ और? मैंने पूछा था ।

– और क्या?

– कुछ ड्रिंक्स

– तुम लेते हो क्या?

– अब लेने लगा हूँ ।

– आई डोन्ट माइन्ड...., लेकिन यह कोई अच्छी चीज तो नहीं है।

–अब अच्छे बुरे को पहचानने का शऊर ही कहाँ रह गया है... मीनाक्षी । उठकर मैंने दो गिलास तैयार कर दिये थे । मीनाक्षी फ्रिज से बर्फ निकाल लाई थी ।"[3] इस वर्ग के लोग शराब को बुरा भी बताते हैं और छोड़ते भी नहीं । इस वर्ग में कई औरतें भी इसका सेवन कर लेती हैं।

मध्यमवर्गीय लोगों की खाने में विशेष पसन्द होती है और ये लोग खाना खाते समय पसन्द नापसन्द का भी ध्यान रखते हैं कि उन्हें किस प्रकार

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (इसीलिये), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 75
2. वही, पृ० 80
3. वही, पृ० 93

का भोजन परोसना चाहिए । 'जनगाथा' उपन्यास में दिखाया गया है "फिर भी बहुत संयमित होकर मैंने कहा था - कुछ भी बना लो । मैं सब कुछ खा लेता हूँ ।'

- लेकिन कुछ तो बताइए न' । शकुन की आवाज में बड़े अपनेपन का आग्रह था ।

मैंने फिर कहा-कुछ भी ।

तब शकुन बोली थी-पहाड़ी लोगों को खीर बहुत अच्छी लगती है। है न? लेकिन कुछ अपनी पसन्द भी तो बताइए.... ।

अब मुझे कहना पड़ा-थोड़ा-सा ककड़ी का रायता भी, मुश्किल न हो तो.... ।"[1]

मध्यमवर्गीय लोग खान-पान का विशेष ध्यान रखते हैं तथा हमेशा अच्छे स्थान पर और अच्छा भोजन परोसना ही पसन्द करते हैं । ये लोग खाने के मामले में पसन्द-नापसन्द का ध्यान रखते हैं ताकि भोजन के मामले में उन्हें किसी प्रकार की हानि न हो । इस वर्ग के लोग ड्रिंक्स भी कर लेते हैं । इन लोगों को फास्ट-फूड भी बहुत पसन्द होता है ।

8.8 पुरुष की वेशभूषा का चित्रण

देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यासों में मध्यमवर्ग की वेश-भूषा के बारे में भी बताया है कि वे लोग किस प्रकार के वस्त्र पहनना चाहते हैं और किस प्रकार का दिखना चाहते हैं । वेश-भूषा के द्वारा ही वे अपना एक अलग वजूद बनाना चाहते हैं । पुरुष वर्ग शादी-विवाह, उत्सव, समारोह, दफ्तर आदि में अलग-अलग प्रकार की वेशभूषा धारण करते हैं और घर की उनकी अलग वेश-भूषा होती है । 'इसीलिये' उपन्यास में मध्यमवर्गीय पुरुष की वेश-भूषा व उनका पहनावे का ढंग दिखाया गया है "छह फुट से भी ऊँची अधेड़ काया । सुनहरा वर्ण । माथे पर त्रिपुण्ड । मोटे ऊन का स्वेटर । छोटे-छोटे खिचड़ी

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (जनगाथा), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 270

वाल । दायीं कलाई में धागा बांधे हुए, पैरों में विदेशी जूते । कंधे पर ऊनी बैग । बैग पर ओवर कोट लटका हुआ । बाई कलाई में कीमती घड़ी । गहरी नीली आँखें । आँखों पर विदेशी फ्रेम का चश्मा । खद्दर का कुर्त्ता-पायजामा और कधें पर कीमती कैमरा ।"[1] मध्यमवर्ग के लोग आकर्षण पैदा करने के लिए अपनी विशेष प्रकार की वेशभूषा खरीदते हैं ताकि समाज में उन्हें जाना जा सके और उनका सम्मान हो । उनमें कुछ अच्छा और अलग दिखने का जुनून-सा होता है । 'इसीलिये' उपन्यास में प्रकाश का पहनावा दिखाया गया है "लम्बा कुर्त्ता और खुले पायचों का पायजामा । झक सफेद-कंधे पर चमड़े का एक झोला । घुंघराले, थोड़े बड़े बाल । प्रकाश का पहनावा यही है ।"[2] मध्यमवर्गीय लोग हमेशा सीधा-सादा पहनावा ही पसन्द करते हैं और बिल्कुल साधारण दिखना चाहे हैं लेकिन इसके साथ-साथ आकर्षण भी दिखाना चाहते हैं, इसलिए वे ज्यादातर सफेद वस्त्र ही धारण करते हैं ।

'इसीलिए' उपन्यास के प्रो० चन्द्रहास की वेशभूषा को दिखाया गया है । "बाल्कनी पर खड़ी हुई वह प्रो० चन्द्रहास को सीढ़ियों पर चढ़ता देख रही है। ऑफ व्हाइट कलर की बुशशर्ट और सफेद पैबंद । चप्पल । घने घुंघराले बाल और मुस्कराता चेहरा।"[3] मध्यमवर्ग के लोग साधारण वस्त्र पहनते हैं लेकिन वो महँगे होते हैं।

देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यासों में मध्यमवर्ग की वेश-भूषा को साधारण तो दिखाया ही है और इसके साथ-साथ आकर्षित कर देने वाली वेश-भूषा भी इस वर्ग के पुरुष पहनते हैं । ये लोग आकर्षक दिखना चाहते हैं ताकि समाज

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (इसीलिये), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 79
2. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (अपना-अपना आकाश), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 117
3. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (इसीलिए), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 382

में उनकी प्रतिष्ठा बने और लोग उन्हें जानें । वे चाहते हैं कि इस समाज में उनका भी अपना अस्तित्व हो ।

8.9 स्त्री की वेशभूषा का चित्रण

देवेश ठाकुर ने अपने उपन्यासों में मध्यमवर्गीय पुरुष की भांति ही मध्यमवर्गीय स्त्री की वेशभूषा के बारे में भी बताया है कि जहाँ पुरुष सीधी-सादी वेशभूषा पहनना पसन्द करते हैं, वहीं कुछ स्त्रियाँ जीन्स और ऊँची एडियों वाले सैंडिल पहनना पसन्द करती हैं तथा वे पाश्चात्य संस्कृति के अनुसार ही अपना जीवन व्यतीत करना चाहती हैं । वे आधुनिक युग में पढ़-लिखकर पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहती हैं । 'जनगाथा' उपन्यास में दिखाया गया है कि मध्यमवर्गीय स्त्री किस प्रकार के वस्त्र पहनकर पूजा करने जाती है । "बायीं ओर के फुटपाथ पर एक लड़की चल रही है । जीन्स । स्लीब्लैस टॉप्स । ऊँची एड़ियों के सैंडिल । बाल धुले और खुले हुए हैं । हाथ में पूजा की सामग्री है ।"[1]

इसके अतिरिक्त देवेश ठाकुर के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय स्त्रियां कुर्त्ता-सलवार, साड़ी आदि भी पनहती हैं और किसी खास मौके पर पारिवारिक वातावरण के अनुसार वेशभूषा पहनती हैं ।

इस प्रकार मध्यमवर्गीय स्त्रियों की वेशभूषा भी आधुनिक युग के अनुसार परिवर्तित हो रही है । कहीं तो स्त्रियाँ जींस-टॉप और ऊँची एड़ियों के सैंडिल पहनती हैं तो कहीं कुर्त्ता-सलवार और साड़ी। यह सब उनके पारिवारिक वातावरण पर निर्भर करता है ।

देवेश ठाकुर ने मध्यमवर्गीय सांस्कृतिक यथार्थ के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न बिन्दुओं को बड़े ही अच्छे ढंग से हमारे सामने प्रस्तुत किया है ।

---

1. रोहिणी शिवबालन (प्र०सं०), देवेश ठाकुर रचनावली-2 (जनगाथा), संकल्प प्रकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण-1992, पृ० 322

मध्यमवर्ग पढ़ा-लिखा होता है और हर बात को सोच-समझकर ही कहना चाहता है । उसकी वार्तालाप एवं संभाषण शैली ऐसी है जिसमें वह अंग्रेजी भाषा के शब्दों का बीच-बीच में प्रयोग अवश्य करता है क्योंकि इसके द्वारा उनके बोलने के लहजे में दम आता है और वे अपने विचारों को प्रभावी बनाते हैं ताकि समाज में उनका सम्मान बढ़े और उन्हें प्रतिष्ठा प्राप्त हो । ये लोग अपने जीवन में सभी प्रकार के त्यौहार-उत्सवों को मनाते हैं तथा उसमें रंग जमाने की पूरी-पूरी कोशिश करते हैं लेकिन शराब, जुआ आदि कारणों से इनके रंग में भंग डल जाता है । बच्चे के जन्म के अवसर पर ये लोग शुभ दिन निश्चित करते हैं और इसी दिन बच्चे का नामकरण-संस्करण होता है । इन लोगों द्वारा नाम बड़े सोच-समझकर, बड़े ही आधुनिक तरीके का और जीवन में प्रभाव डालने वाला रखा जाता है ताकि वो जीवन में नाम के अनुसार विद्वता और प्रतिष्ठा प्राप्त कर सके । मध्यमवर्गीय लोगों में विवाह से संबंधी विविध रीतियाँ होती हैं जिनमें विवाह से पूर्व, विवाह में तथा विवाह के पश्चात् बहुत-सी रीतियाँ निभाई जाती हैं और इसी प्रकार किसी की मृत्यु होने पर भी विभिन्न प्रकार की रीतियाँ निभाई जाती हैं, जो मरने वाले की आत्मा को शान्ति देती हैं । इस वर्ग के लोगों के आचार एवं व्यवहार को लें तो इनको अपने पारिवारिक माहौल से ही बहुत कुछ सीखने को मिलता है । ये लोग अपने परिवार से ही व्यवहार करना सीखते है तथा वहाँ के वातावरण से उनका व्यवहार बनता है । इस वर्ग के लोग समय, स्थान और व्यक्ति देखकर ही उसके साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं। मध्यमवर्गीय पुरुष तो सीधी-सादी वेशभूषा पहनना पसन्द करते हैं लेकिन वह आकर्षित करनी वाली हो । इस प्रकार की वेशभूषा महंगी होती है । दूसरी ओर मध्यमवर्गीय स्त्रियाँ पढ़ी-लिखी होने के कारण जीन्स, टॉप और ऊँची सैंडिल पहनना पसन्द करती हैं तथा इसके साथ-साथ वे लहंगा-चोली, साड़ी और कुर्त्ता-सलवार पहनना भी उन्हें अच्छा लगता है । इस वर्ग के लोग खान-पान का विशेष ध्यान रखते हैं ।

इन लोगों की खाने की अपनी-अपनी पसन्द होती हैं और ये लोग किसी भी खाने की वस्तु की वरायटी भी देखते हैं। उन्हें फास्ट-फूड और कोल्ड-ड्रिंक्स आदि चीजें बहुत पसन्द होती हैं । वे किसी मेहमान के आने पर उसे अच्छे-से-अच्छा भोजन परोसना चाहते हैं ताकि समाज में उनकी प्रतिष्ठा बढ़े ।